6 अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी

उन्मुखीकरण

पशु-पक्षियों की भी भाषा होती है। इसका मतलब वे एक-दूसरे का आशय बखूबी समझ लेते हैं। यह बात तो है कि पशु-पक्षियों की मनुष्यों जैसी सुविकसित भाषा नहीं होती, पर वे सीधी-सादी आवाज़ों और क्रियाओं से अपने भाव व्यक्त कर सकते हैं। ये बड़ी आसानी से खुशी, भय, चेतावनी, आमंत्रण जैसी कई भावनाएँ दर्शा सकते हैं। किसी पक्षी द्वारा किये गये संकेत अन्य पक्षी भी पहचान सकते हैं।

प्रश्न

1. आवाज़ का पर्याय क्या है?
2. किसी प्राणी की अनोखी विशेषता बताइए।
3. इस गद्यांश के लिए उचित शीर्षक दीजिए।

उद्देश्य

छात्रों को पत्र लेखन की विविध शैलियों का ज्ञान कराना, उनके लेखन सृजन के विकास के साथ-साथ उन्हें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का महत्व बताना है।

विधा विशेष

पत्र गद्य की एक प्रमुख विधा है। पत्र विधा पाठ में प्रेषक अपने विषय से जुड़ा पत्र पावक (पत्र पाने वाला) के नाम लिखता है। इसमें एक मित्र अपने दूसरे मित्र को हिंदी सीखने तथा उससे होने वाले लाभों के बारे में बता रहा है।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हो तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

विषय प्रवेश : *हिंदी एक ऐसी भाषा है जो भारतीयों की साँसों में बसी है। यह सबकी संस्कृति, सभ्यता व गरिमा का प्रतीक है। गाँधी जी ने अपना जीवन देश की स्वतंत्रता के साथ-साथ हिंदी की सेवा में समर्पित कर दिया था। अब हिंदी न केवल भारत की बल्कि विश्व की भाषा बन चुकी है। संसार के विविध क्षेत्रों में हिंदी करोड़ों लोगों की जीविका बन चुकी है।*

हैदराबाद,
8-9-2014.

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो? आशा करता हूँ कि तुम अपने परिवार के साथ सकुशल हो। यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि तुम हिंदी से जुड़े विविध कार्यक्रमों में भाग ले रहे हो।

तुमने अपने पत्र में जानना चाहा कि हिंदी भाषा का अपने जीवन में क्या महत्व है? मैं तुम्हारी जिज्ञासा का नीचे समाधान दे रहा हूँ।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में देश को एकता के सूत्र में बाँधने के लिए एक भाषा की आवश्यकता हुई। यह काम हिंदी से ही साध्य हो सका। आज हमें एक से अधिक भाषाएँ सीखना ज़रूरी है। जिनमें हिंदी और अंग्रेज़ी का स्थान महत्वपूर्ण है। हिंदी से हम सारे भारत की पहचान अच्छी तरह से कर सकते हैं। भारत के अलग-अलग प्राँतों में अलग-अलग भाषाएँ बोली जाती हैं। हमें भारत के सभी प्राँतों से जुड़ने के लिए एक भाषा की आवश्यकता होती है जिसे सारे भारत के वासी जानते हैं। वैसी भाषा ही हिंदी है, जो सारे भारतीयों को एकता के सूत्र में बाँधती है। हिंदी अपने शाब्दिक अर्थ से भी भारतीय कहलाती है। इसलिए देश के वर्तमान और भविष्य को ध्यान में रखकर भारतीय संविधान ने अनुच्छेद 343 (1) के तहत हिंदी को 14 सितंबर, 1949 को राजभाषा के रूप में गौरवान्वित किया है। तब से हम हर वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाते हैं।

आज भारत के अलावा बंग्लादेश, नेपाल, म्यांमार, भूटान, फिज़ी, गुयाना, सूरीनाम, त्रिनिडाड एवं टुबेगो, दक्षिण अफ्रिका, बहरीन, कुवैत, ओमान, कत्तर, सौदी अरब गणराज्य, श्रीलंका, अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी, जापान, मॉरिशस, ऑस्ट्रेलिया आदि देशों में हिंदी की माँग बढ़ती ही जा रही है। विदेशों में भी हिंदी की रचनाएँ लिखी जा रही हैं, जिसमें वहाँ के साहित्यकारों का भी विशेष योगदान है। ये हम सब के लिए गर्व की बात है कि विदेशों में भारतीयों से आपसी व्यवहार करने के लिए वहाँ के लोग भी हिंदी सीख रहे हैं। इस तरह हिंदी की माँग आज विश्वभर में बढ़ती ही जा रही है। इसलिए भारत के अलावा अन्य देशों में भी कई संस्थाएँ हिंदी के प्रचार व प्रसार में जुटी हुई हैं। जिनमें केंद्रीय हिंदी संस्थान हिंदी शिक्षण प्रशिक्षण कार्यों से देश विदेश में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। आज विश्व भर में क़रीब डेढ़ सौ से अधिक विश्वविद्यालय हिंदी संबंधी कोर्सों का

संचालन कर रहे हैं। बैंक, मीडिया, फिल्म उद्योग आदि क्षेत्रों में हिंदी की उपयोगिता दिन-ब-दिन बढ़ती ही जा रही है। इस तरह आज हिंदी नये-नये रोज़गारों का प्रमुख आधार बन चुकी है। हिंदी से अपने भविष्य का निर्माण करने वालों के लिए www.rajbhasha.nic.in, www.ildc.gov.in, www.bhashaindia.com, www.ssc.nic.in, www.parliamentofindia.nic.in, www.ibps.in, www.khsindia.org, www.hindinideshalaya.nic.in आदि वेबसाइट सेवा में तत्पर हैं। यह हमारे लिए गर्व की बात है कि सारा विश्व हिंदी का महत्व जान चुका है इसका प्रमाण यह है कि सारे विश्व में 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है। इस तरह हिंदी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शोभित है।

हाँ, तुमने आगे की पढ़ाई के लिए द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी विषय का चयन करने की सलाह पूछी थी। हम जान चुके हैं कि आज राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का महत्वपूर्ण स्थान है। हम इससे अपने उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर सकते हैं। इसलिए आगे की पढ़ाई के लिए प्रथम भाषा हो या द्वितीय भाषा, हिंदी का चयन करना ही लाभदायक है। मुझे पूरा विश्वास है कि तुम हिंदी से जुड़कर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने देश का नाम रोशन करोगे।

घर में बड़ों को मेरा प्रणाम कहना। अपने स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखना।

तुम्हारा प्रिय मित्र,
बशीर अहमद

पता :
श्री एस. अभिनव कुमार,
दसवीं कक्षा,
ए.पी. मॉडल स्कूल, वेलदंडा,
महबूबनगर - 509360.

प्रश्न

1. भारत देश को स्वतंत्र कराने में हिंदी भाषा का क्या योगदान रहा होगा?
2. हिंदी भाषा की क्या विशेषता है?
3. हिंदी भाषा सीखने से क्या-क्या लाभ हैं?

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. 'हिंदी विश्वभाषा है।' इस कथन के बारे में अपने विचार व्यक्त कीजिए।
2. 'भारत में अनेकता में एकता का प्रतीक हिंदी है।' कैसे?

(आ) पाठ के आधार पर निम्न प्रश्नों के उत्तर हाँ या नहीं में दीजिए।

1. हिंदी देश को एकता के सूत्र में बाँधती है। ( )
2. 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। ( )
3. 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है। ( )
4. हिंदी भाषा से रोज़गार की संभावनाएँ अधिक हैं। ( )

(इ) नीचे दिये गये वाक्य पाठ के आधार पर उचित क्रम में लिखिए।

1. भारतीय हिंदी शाब्दिक अर्थ भी कहलाती है से अपने
2. हिंदी 14 सितंबर मनाते हैं को दिवस
3. तरह इस हिंदी अंतर्राष्ट्रीय पर शोभित है स्तर
4. स्वास्थ्य ध्यान पूरा रखना का अपने

(ई) नीचे दिया गया विज्ञापन पढ़िए। प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

भारतीय स्टेट बैंक

विज्ञापन क्र.सं.सीआरपी.डी./एससीओ/2013-14/01
भारतीय स्टेट बैंक में राजभाषा अधिकारियों की भर्ती

भारतीय स्टेट बैंक में राजभाषा अधिकारियों की (सहायक प्रबंधक - राजभाषा) भर्ती के लिए भारतीय नागरिकों से आवेदन आमंत्रित किये जाते हैं। योग्य आवेदक आवेदन करने के लिए हमारी वेबसाइट http://www.statebankofindia.com अथवा http://www.sbi.co.in पर जाकर अन्य विवरण प्राप्त कर सकते हैं। आवेदक शुल्क भेजने से पूर्व विज्ञापन में दिया गया विवरण पूरी तरह से पढ़ लें।

आवेदन आरंभ हो रहे हैं : 25.05.2013
पंजीकरण की अंतिम तिथि : 13.07.2013

स्थान : मुंबई
दिनांक : 10.05.2013

1. यह विज्ञापन किस बैंक का है?
2. किस नौकरी के लिए यह विज्ञापन दिया गया है?
3. आवेदन करने से पहले वेबसाइट से अन्य जानकारी प्राप्त करने के लिए क्यों कहा गया होगा?

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।

1. सांस्कृतिक दृष्टि से हिंदी का क्या महत्व है?
2. हिंदी देश को जोड़ने वाली कड़ी है। इसे अपने शब्दों में सिद्ध कीजिए।

(आ) राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से हिंदी महत्वपूर्ण भाषा है। इस पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

(इ) 'हिंदी भाषा' पर एक छोटा सा निबंध लिखिए।

(ई) मनोरंजन की दुनिया में हिंदी के महत्व पर प्रकाश डालिए।

भाषा की बात

(अ) कोष्ठक में दी गयी सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. भाषा, समाधान, संकल्प (एक-एक शब्द का वाक्य प्रयोग कीजिए और उसके पर्याय शब्द लिखिए।)
2. एकता, स्वदेश, प्राचीन (एक-एक शब्द का विलोम शब्द लिखिए और उससे वाक्य प्रयोग कीजिए।)
3. परीक्षा, संस्था, दिशा (एक-एक शब्द का वचन बदलिए और वाक्य प्रयोग कीजिए।)

(आ) सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. सकुशल, अनुक्रम, अनुचित (उपसर्ग पहचानिए।)
2. वार्षिक, खुशी, भारतीय (प्रत्यय पहचानिए।)
3. देश को एकता के सूत्र में बाँधने के लिए एक भाषा की आवश्यकता हुई। (कारक पहचानिए।)

(इ) सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. सलाह, सरकार, संविधान, संस्कृति, समाधान (लिंग की पहचान कीजिए।)
2. जो विश्व के सभी देशों से जुड़ा हो। (एक शब्द में लिखिए।)
3. अद्‌वितीय (अनेक शब्दों में लिखिए।)

(ई) नीचे दिये गये वाक्य रचना की दृष्टि से समझिए।

1. मुझे पूरा विश्वास है कि तुम हिंदी से अपना भविष्य बनाओगे ।
2. जो जानकारी दी गयी है उसे समझिए।
3. तुमने पूछा कि हिंदी का क्या महत्व है?

परियोजना कार्य

इस पुस्तक के पहले पाठ से पाँचवें पाठ तक आये चित्रों में अपने मनपसंद चित्र का चयन कीजिए और उसके बारे में पाँच वाक्य लिखिए। उसका प्रदर्शन कक्षा में कीजिए।

उपवाचक

दो कलाकार

- मन्नू भंडारी

''ए रूनी, उठ।'' और चादर खींचकर चित्रा ने सोती हुई अरुणा को झकझोर कर उठा दिया। ''अरे! क्या है?'' आँखें मलते हुए तनिक खिझलाहट भरे स्वर में अरुणा ने पूछा। चित्रा उसका हाथ पकड़कर खींचती हुई ले गयी और बोली, ''देख, मेरा चित्र पूरा हो गया।''

''ओह! तो इसे दिखाने के लिए तूने मेरी नींद ख़राब कर दी।''

''अरे! ज़रा इस चित्र को तो देख। न पा गयी पहला इनाम तो नाम बदल देना।''

चित्र को चारों ओर घुमाती हुई अरुणा बोली, ''किधर से देखूँ, यह तो बता दे? हज़ार बार तुझसे कहा कि जिसका चित्र बनायें, उसका नाम लिख दिया कर, जिससे ग़लतफ़हमी न हुआ करें, वरना तू बनाये हाथी ही और समझें उल्लू।'' तस्वीर पर आँखें गड़ाती हुई बोली, ''किसी तरह नहीं समझ पा रही हूँ आख़िर यह किस जीव की तस्वीर है।''

''तो आपको यह कोई जीव नज़र आ रहा है? ज़रा अच्छी तरह देख और समझने की कोशिश कर।''

''अरे! यह क्या? इसमें तो सड़क, आदमी, ट्रैम, बस, मोटर और मकान सब एक-दूसरे पर चढ़ रहे हैं। मानो सबकी खिचड़ी पकाकर रख दी हो। क्या घनचक्कर बनाया है?'' यह कहकर अरुणा ने चित्र रख दिया।

''ज़रा सोचकर बता कि यह किसका प्रतीक है?''

''तेरी बेवकूफ़ी का। आयी है बड़ी प्रतीक वाली।''

''अरे जनाब! यह चित्र तो आज की दुनिया में 'कन्फ्यूजन' का प्रतीक है, समझी।''

''मुझे तो तेरी दिमाग़ के कन्फ्यूजन का प्रतीक आ रहा है, बिना मतलब ज़िंदगी ख़राब कर रही है।'' और अरुणा मुँह धोने के लिए बाहर चली गयी। लौटी तो देखा तीन-चार बच्चे उसके कमरे के दरवाज़े पर खड़े उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। आते ही बोली, ''आ गये बच्चो! चलो, मैं अभी आयी।''

''क्या यह बंदर पाल रखी है तूने?'' फिर ज़रा हँसकर चित्रा बोली, ''एक दिन तेरी पाठशाला का चित्र बनाना होगा। लोगों को दिखाया करेंगे कि हमारी एक मित्र साहिबा थीं जो बस्ती के बच्चों को पढ़ा-पढ़ाकर ही अपने आप को भारी पंडिताइन और समाज सेविका समझती थीं।''

चार बजते ही कॉलेज से सारी लड़कियाँ लौट आयीं, पर अरुणा नहीं लौटी। चित्रा चाय के लिए उसकी प्रतीक्षा कर रही थी।

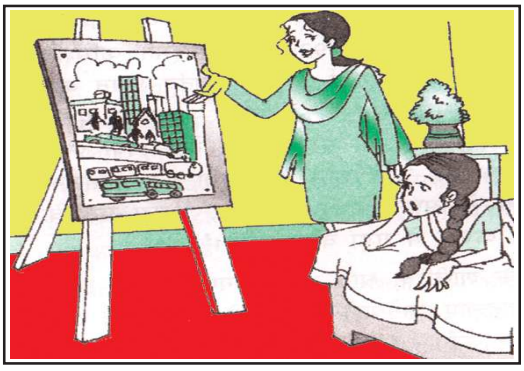

''पता नहीं, कहाँ-कहाँ भटक जाती है, बस इसके पीछे बैठे रहो।''

''अरे! क्यों बड़-बड़ कर रही है? ले, मैं आ गयी। चल, बना चाय। मिलकर ही पियेंगे।''

''ये ले कोई चिट्ठी आयी है।''

अरुणा लिफाफ़ा फाड़कर पत्र पढ़ने लगी। जब उसका पत्र समाप्त हो गया तो चाय पीते-पीते चित्रा बोली, ''आज पिताजी का पत्र आया है, लिखा है, जैसे ही यहाँ कोर्स समाप्त हो जायें, मैं विदेश जा सकती हूँ। मैं तो जानती थी कि पिताजी कभी मना नहीं करेंगे।''

''हाँ भाई! धनी पिता की इकलौती बिटिया ठहरी। तेरी इच्छा कभी खाली जा सकती है? पर सच कहती हूँ मुझे तो सारी कला इतनी निरर्थक लगती है, इतनी बेमतलब लगती है कि बता नहीं सकती। किस काम की ऐसी कला, जो आदमी को आदमी न रहने दे।'' अरुणा आवेश से बोली। ''तो तुम मुझे आदमी नहीं समझती, क्यों?''

''तुझे दुनिया से कोई मतलब नहीं, दूसरों से कोई मतलब नहीं। बस चौबीस घंटे अपने रंगों और तूलियों में डूबी रहती है। दुनिया में कितनी बड़ी घटना घट जाये पर यदि उसमें तेरे चित्र के लिए आइडिया नहीं तो तेरे लिए वह घटना कोई महत्व नहीं रखती। हर घड़ी, हर जगह, हर चीज़ में तू अपने चित्रों के लिए मॉडल खोजा करती है। कागज़ पर इन निर्जीव चित्रों को बनाने की जगह दो-चार की ज़िंदगी क्यों नहीं बना देती। तेरे पास सामर्थ्य है, साधन है।''

''वह काम तो तेरे लिए छोड़ दिया। मैं चली जाऊँगी तो जल्दी से सारी दुनिया का कल्याण करने के लिए झंडा लेकर निकल पड़ना।'' और चित्रा हँस पड़ी।

तीन दिनों से मूसलधार वर्षा हो रही थी। रोज़ अख़बारों में बाढ़ की ख़बरें आती थीं। बाढ़ पीड़ितों की दशा बिगड़ती जा रही थी और वर्षा थी कि थमने का नाम नहीं लेती। अरुणा सारा दिन चंदा इकट्ठा करने में व्यस्त रहती। एक दिन आख़िर चित्रा ने कह दिया - ''तेरे इंतेहान सिर पर आ रहे हैं, कुछ पढ़ती-लिखती है कि नहीं, सारा दिन बस भटकती रहती है। माता-पिता क्या सोचेंगे कि इतना सारा पैसा पानी में बहा दिया।''

''आज शाम को स्वयंसेवकों का एक दल जा रहा है, प्रिंसिपल से अनुमति ले ली है, मैं भी उसके साथ जा रही हूँ।'' चित्रा की बात को बिना सुने उसने कहा।

शाम को अरुणा चली गयी। पंद्रह दिन बाद वह लौटी तो उसकी हालत काफ़ी ख़राब हो रही थी। सूरत ऐसी निकल आयी थी कि मानो छह महीने से बीमार है। चित्रा उस समय गुरुजी के पास गयी हुई थी। अरुणा नहा-धोकर, खा-पीकर लेटने लगी। तभी उसकी नज़र चित्रा के नये चित्रों की ओर गयी। तीन चित्र बने रखे थे। तीनों बाढ़ के चित्र थे जो दृश्य अपनी आँखों से देखकर आ रही थी वैसे ही दृश्य यहाँ पर अंकित थे। उसका मन न जाने कैसा-कैसा हो गया।

शाम को चित्रा लौटी तो अरुणा को देखकर बड़ी प्रसन्न हुई। ''क्यों चित्रा, तेरा जाने का तय हो गया?''

''हाँ, अगले बुध को मैं घर जाऊँगी और एक सप्ताह बाद हिंदुस्तान की सीमा के बाहर चली जाऊँगी।'' उल्लास उसके स्वर में छलक रहा था।

''सच कह रही है, तू चली जाएगी चित्रा, छह साल से साथ रहते-रहते यह बात मैं तो भूल गयी कि कभी हमको अलग भी होना पड़ेगा। तू चली जाएगी तो मैं कैसे रहूँगी?'' उदासी भरे स्वर में अरुणा ने पूछा। लगा जैसे स्वयंसेवी पूछ रही हो।

कितना स्नेह था दोनों में, सारा हॉस्टल उनकी मित्रता को ईर्ष्या की दृष्टि से देखता था। आज चित्रा को जाना था। अरुणा सवेरे से ही उसका सारा सामान ठीक कर रही थी। एक-एक करके चित्रा सबसे मिल आयी, बस गुरुजी से मिलना रह गया था, सो उनका आशीर्वाद लेने चल पड़ी। तीन बज गये थे, पर वह लौटी नहीं। पाँच बजे की गाड़ी से वह जाने वाली थी। अरुणा ने सोचा कि वह खुद जाकर देख आये कि आख़िर बात क्या हो गयी। तभी हड़बड़ाती सी चित्रा ने प्रवेश किया। ''बड़ी देर हो गयी है न। अरे! क्या करूँ कि बस कुछ ऐसा हो गया, कि रुकना ही पड़ा।''

''आख़िर क्या हो गया ऐसा, जो रुकना ही पड़ा, सुनें तो।'' दो-तीन कंठ एक साथ बोले, ''गर्ग स्टोर के सामने पेड़ के नीचे अक्सर भिखारिन रहा करती थीं न! लौटी तो देखा कि वह गुज़र गई और उसके दोनों बच्चे उसके सूखे शरीर से चिपककर बुरी तरह रो रहे हैं। जाने क्या था पूरे दृश्य में कि मैं अपने को रोक नहीं सकी। एक रफ़ सा स्केच बना ही डाला। बस इसी में देर हो गयी।''

साढ़े चार बजे चित्रा हॉस्टल के फाटक पर आ गयी, पर तब तक अरुणा का कहीं पता नहीं था। बहुत सारी लड़कियाँ उसे छोड़ने स्टेशन तक भी गयीं, पर चित्रा की आँखें बराबर अरुणा को ढूँढ़ रही थी। पाँच भी बज गये, रेल चल पड़ी पर अरुणा न आयी, सो न आयी।

विदेश जाकर चित्रा तन-मन से अपने काम में जुट गयी। उसकी लगन ने उसकी कला को निखार दिया। विदेश में उसके चित्रों की धूम मच गयी। भिखारिन और दो अनाथ बच्चों के उस चित्र की प्रशंसा में तो अख़बारों के कालम के कालम भर गये। शोहरत के ऊँचे कगार पर बैठ, चित्रा जैसे अपना पिछला सब कुछ भूल गयी। पहले वर्ष तो अरुणा से पत्र व्यवहार बड़े नियमित रूप से चला। फिर कम होते-होते एकदम बंद हो गया। पिछले एक साल से तो उसे यह भी मालूम नहीं कि वह कहाँ है? अनेक प्रतियोगिताओं में उसका 'अनाथ' शीर्षक वाला चित्र प्रथम पुरस्कार पा चुका था। जाने क्या था उस चित्र में, जो देखता चकित रह जाता। तीन साल बाद जब वह भारत लौटी तो बड़ा स्वागत हुआ उसका। अख़बारों में उसकी कला पर, उसके जीवन पर अनेक लेख छपे। पिता अपनी इकलौती बिटिया की इस सफलता पर बहुत प्रसन्न थे। दिल्ली में उसके चित्रों की प्रदर्शनी का विराट आयोजन किया गया। उद्घाटन करने के लिए उसे ही बुलाया गया।

उस भीड़-भाड़ में अचानक उसकी भेंट अरुणा से हो गयी। 'रूनी' कहकर चित्रा भीड़ की उपस्थिति को भूलकर अरुणा के गले लिपट गयी।

''तुझे कब से चित्र देखने का शौक़ हो गया, रूनी?''

''चित्रों को नहीं, चित्रा को देखने आयी थी। तू तो एकदम भूल ही गयी।''

''अरे! ये बच्चे किसके हैं?'' दो प्यारे से बच्चे अरुणा से सटे खड़े थे। लड़के की उम्र दस साल की होगी। तो लड़की की उम्र कोई आठ।

''मेरे बच्चे हैं, और किसके। यह तुम्हारी चित्रा मौसी हैं, नमस्ते करो, अपनी मौसी को।'' अरुणा ने आदेश दिया।

बच्चों ने बड़े आदर से नमस्ते किया। पर चित्रा अवाक् होकर कभी बच्चों को, कभी अरुणा का मुँह देख रही थी। तभी अरुणा ने टोका। ''कैसी मौसी है, प्यार तो कर।'' और चित्रा ने दोनों पर प्यार से हाथ फेरा। अरुणा ने कहा ''तुम्हारी यह मौसी बहुत अच्छी तस्वीरें बनाती हैं, ये सारी तस्वीरें इन्हीं की बनायी हुई हैं।''

''आप हमें सब तस्वीरें दिखाइए मौसी'' बच्चों ने फ़रमाइश की। चित्रा उन्हें तस्वीरें दिखाने लगी। घूमते-घूमते वे उसी भिखारिन वाली तस्वीर के सामने आ पहुँचे। चित्रा ने कहा, ''यही वह तस्वीर है रूनी, जिसने मुझे इतनी प्रसिद्धि दी।''

''ये बच्चे रो क्यों रहे हैं मौसी'' तस्वीर को ध्यान से देखकर बालिका ने पूछा।

''उनकी माँ गुज़र गयी है। देखती नहीं, इतना भी नहीं समझती।'' बालक ने मौक़ा पाते ही अपने बड़प्पन और ज्ञान की छाप लगायी।

''ये सचमुच के बच्चे थे? मौसी!'' बालिका का स्वर करुण से करुणतर होता जा रहा था।

''अरे! सचमुच के बच्चों को देखकर ही तो बनायी थी यह तस्वीर।''

''मौसी, हमें ऐसी तस्वीर नहीं, अच्छी-अच्छी तस्वीरें दिखाओ, राजा-रानी की, परियों की।''

उन तस्वीरों को और अधिक देर तक देखना बच्चों के लिए असह्य हो उठा था। तभी अरुणा के पति आ पहुँचे। साधारण बातचीत के पश्चात अरुणा ने दोनों बच्चों को उनके हवाले करते हुए कहा, ''आप ज़रा बच्चों को प्रदर्शिनी दिखाइए, मैं चित्रा को लेकर घर चलती हूँ।''

बच्चे इच्छा न रहते हुए भी पिता के साथ विदा हुए। चित्रा को दोनों बच्चे बड़े ही प्यारे लगे। वह उन्हें देखती रही। जैसे ही वे आँखों से ओझल हुए उसने पूछा, ''सच-सच बता रूनी, ये प्यारे-प्यारे बच्चे किसके हैं?''

''कहा तो, मेरे।'' अरुणा ने हँसते हुए कहा।

''अरे! बता न, मुझे ही बेवकूफ़ बनाने चली है।'' एक क्षण रुककर अरुणा ने कहा, ''बता दूँ?'' और फिर उस भिखारिन वाले चित्र के दोनों बच्चों पर उँगली रखकर बोली, ''यही वे दोनों बच्चे हैं।''

''क्या.....'' चित्रा की आँखें विस्मय से फैली रह गयीं?

''क्या सोच रही चित्रा?''

''कुछ नहीं..... मैं..... सोच रही थी कि.....।'' पर शब्द शायद उसके विचारों में खो गये।

-(मन्नु भण्डारी की कहानी पर आधारित)

प्रश्न :

1. अरुणा व चित्रा दोनों के स्वभाव के बारे में अपने विचार बताइए।
2. चित्रा ने विदेश जाकर क्या किया? आप के विचार में उसका विदेश जाना सही था? क्यों?
3. अरुणा की ममता पर अपने विचार बताइए।